समाज विकासमाला



संत तुकाराम

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

समाज-विकास-माला : २९

संत तुकाराम

जीवन-परिचय और चुने हुए पद

लेखक

श्रीपाद जोशी

सम्पादक

यशपाल जैन

१९५६

सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल
नई दिल्ली

दूसरी बार : १९५६
मूल्य
छः आना

मुद्रक
नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स
दिल्ली

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामन आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा। बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

इस पुस्तक-माला को हमने इन्हीं बातों को सामने रखकर चालू किया है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रक्खा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में पाठकों को सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

दूसरा संस्करण

बड़े हर्ष की बात है कि इस पुस्तक का दूसरा संस्करण इतनी जल्दी प्रकाशित हो रहा है। इस माला की सभी पुस्तकें पाठकों को पसन्द आ रही हैं, इससे हमें बड़ा आनन्द होता है। हमें विश्वास है कि इन सामयिक और उपयोगी पुस्तकों को पाठक चाव से पढ़ेंगे और इनके प्रचार में हाथ बटायंगे।

—मंत्री

पाठकों से

आप कई संतों की वाणियाँ इस पुस्तक-माला में पढ़ चुके हैं। लीजिये, अब तुकाराम के पद पढ़िये। तुकाराम महाराष्ट्र में पैदा हुए थे और उन्होंने मराठी में लिखा है। संत की भाषा दिल से निकलती है, इसलिए सबकी समझ में आ जाती है। पाठक देखेंगे कि तुकाराम के पदों में कितना मिठास है, साथ ही कितनी गहराई है।

आप इन पदों को ध्यान से पढ़ें और उनमें जो बातें कही गई हैं, उनका मनन करें। बड़ा लाभ होगा।

—सम्पादक



संत तुकाराम

संत तुकाराम

: १ :

तुकाराम कौन थे ?

महाराष्ट्र में ऐसा एक भी पढ़ा-लिखा या अपढ़ आदमी नहीं मिलेगा, जिसे सन्त तुकाराम के पदों की कुछ-न-कुछ पंक्तियाँ याद न हों। पिछले तीन सौ बरसों से तुकाराम की कविता महाराष्ट्र की जनता की आध्यात्मिक प्यास बुझाती आई है और जैसे-जैसे दिन गुजरते जाते हैं वैसे-वैसे लोगों में उनकी कविता का चाव बढ़ता जाता है। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि आज हम जिस बराबरी की बातें कर रहे हैं, उसे अपनी कविता में तीन सौ बरस पहले तुकाराम महाराज ने मान कर निडरता के साथ उसका प्रचार किया था। दूसरा कारण, जो सभी संतों के बारे में कहा जा सकता है, यह कि तुकाराम ने किताबों और ज्ञान की बड़ी-बड़ी बातों के झंझट में न पड़कर ईश्वर को पाने का सबसे आसान और सबके लिए खुला रास्ता लोगों को दिखाया।

महाराष्ट्र का पूना शहर सैकड़ों बरसों से शिक्षा, राजनीति, समाज-सुधार आदि बातों के लिए मशहूर है। यहाँ से कोई पंद्रह मील की दूरी पर इन्द्रायणी नदी के किनारे देहू गाँव में अंबिले नाम के एक ऊँचे घराने में तुकाराम का जन्म हुआ था। उनकी जन्मतिथि के बारे में विद्वानों की अलग-अलग राय है, मगर आमतौर पर यह समझा जाता है कि उनका जन्म सन् १६०८ ईसवी यानी संवत् १६६४ में हुआ था। उनके पुरखे पिछले पचास-साठ बरसों से 'मोरे' उपनाम लगाते आये हैं, मगर उनके कुनबे वाले 'देहूकर गोसावी' (गुसाँई) के नाम से ही मशहूर हैं।

तुकाराम महाराज के घराने में सिपहगरी भी चलती आई थी; लेकिन उनके जन्म के समय से पहले उनके घर के लोग व्यापार-धंधा ही करने लग गये थे और वे 'वाणी' यानी 'बनिया' कहलाने लगे थे। इसलिए तुकाराम भी महाजनी और दूकानदारी करने लगे। तुकाराम को अपनी ऊँची जाति का कभी घमंड नहीं हुआ। वे हमेशा अपने को मामूली लोगों में से ही एक समझते रहे। वे कहते हैं—

शूद्रवंशीं जन्मलों । म्हणोनि दंभें मोकलिलों ।।
अरे तूंच माझा आतां । मायबाप पंढरीनाथा ।।

धोकाया अक्षर । मज नाहीं अधिकार ॥
सर्वभावें दीन । तुका म्हणे यातिहीन ॥

—मैं शूद्रवंश में पैदा हुआ, इसीलिए मुझमें दंभ नहीं रहा। हे भगवान, तू ही अब मेरा माँ-बाप है। वेद-पठन का अधिकार मुझे नहीं है। मैं सब तरह से दीन और जातिहीन हूँ। और

याती शूद्र वैश्य केला वेवसाव ।

—मेरी जाति शूद्र है और मैंने वैश्य का व्यवसाय किया। तथा

बरा देवा कुणबी केलों । नाहीं तरी दंभें असतों मेलों ॥
भलें केलें देवराया । नाचे तुका लागे पायां ॥
विद्या असती कांहीं । तरी पडतों अपायीं ॥
सेवा चुकतों संतांची । हेचि नागवण फुकाची ॥
गर्व होता ताठा । जातों यमपंथें वाटा ॥
तुका म्हणे थोरपणें । नरक होती अभिमानें ॥

—अच्छा हुआ हे भगवान, कि तूने मुझे किसान बनाया, वरना मैं घमंड से मर गया होता। हे ईश्वर, तूने अच्छा किया, क्योंकि अब तुकाराम नाचता है और तेरे चरण छूता है। अगर मुझमें कुछ विद्या होती तो बड़े झंझट में फँस जाता। तब मैं संतों की सेवा न करता और मुफ्त में लुट जाता। अगर मैं मामली

किसान न होता तो मुझमें दुनिया भर का घमंड आ जाता और यमराज के मार्ग से चलने लगता। (तुकाराम कहता है) बड़प्पन के अभिमान से आदमी नरक में चला जाता है।

महाराष्ट्र में हर एकादशी के दिन और ख़ासकर आषाढ़ और कार्तिक सुदी की एकादशी को पंढरपुर की यात्रा पैदल करने का रिवाज सैकड़ों बरसों से चला आया है। पंढरपुर में विट्ठल या विठोबा[1] की मूर्ति है। पंढरपुर की इस यात्रा को 'वारी' कहते हैं और 'वारी' करने वालों को 'वारकरी' कहा जाता है। वारकरियों का एक अलग पंथ ही है, जिसे 'वारकरी पंथ' या 'वारकरी संप्रदाय' कहते हैं। ये वारकरी लोग गले में तुलसी की माला पहनते हैं, मांस नहीं खाते, शराब नहीं पीते और चोरी, झूठ आदि बुराइयों से दूर रहते हैं, या उनको दूर रहना चाहिए। इस पंथ के लाखों लोग महाराष्ट्र में आज भी मौजूद हैं। तुकाराम महाराज के पुरखाओं में कई वारकरी थे और कहते हैं कि स्वयं तुकाराम भी जीवन के अन्त तक पंढरपुर की यात्रा नियमित रूप से करते रहे।

---

[1] विठोबा को पांडुरंग भी कहते हैं और वे श्री विष्णु का अवतार माने जाते हैं।

श्री तुकाराम महाराज के पिता बोल्होबा और माता कनकाई दोनों भगवान के बड़े भक्त थे। तुकाराम के बड़े भाई सावजी को भी उन्हींकी तरह दुनिया से कोई लगाव न था। तुकाराम की पहली स्त्री रखमाई दमे से बीमार थी, इसलिए पूना के एक बड़े साहूकार की लड़की आवली के साथ तुकाराम का दूसरी बार ब्याह हुआ और उसका नाम जिजाबाई रखा गया। इस स्त्री से उनके तीन लड़के और तीन लड़कियाँ हुईं। उनमें से बड़े पुत्र नारायण बाबा ब्रह्मचारी रहे।

पहले से ही तुकाराम का ध्यान व्यापार में नहीं था और अपने पास का पैसा वे ग़रीबों की मदद में लुटा देते थे। इसलिए उनको बहुत नुकसान उठाना पड़ा। कई लोग उनसे माल उधार ले जाते और फिर पैसा ही न देते। इससे उनकी दूकान का दिवाला निकल गया। इसके बाद उन्होंने गोनियों में अनाज, नमक, मिर्च वगैरह लादकर दूर-दूर के शहरों और गाँवों में ले जाकर बेचना शुरू किया। मगर वहाँ भी उनके भोले-पन और सीधेपन से लाभ उठाकर लोग उनको ठगते। एक बार वह अपना माल बेचकर वापस आ रहे थे। रास्ते में एक बूढ़े ने उनके पाँव पकड़ लिये और मदद की भीख माँगी। उस बढ़े का जवान लड़का मर गया

था और उसकी जमीन साहूकार के कब्जे में चली गई थी। उसकी कहानी सुनकर तुकाराम महाराज पसीज गये और उन्होंने अपने पास के पचास रुपये उसको देकर कहा, "यह लो, इससे अपना खेत छुड़वा लेना।" जब खाली हाथ घर लौटे तो उनकी पत्नी जिजाबाई ने उनकी अच्छी खबर ली। ऐसी घटनाएं हमेशा होती रहती थीं।

सन् १६३०-३१ में महाराष्ट्र में बड़ा भयंकर अकाल पड़ा। उसमें उनकी बड़ी स्त्री रखमाई और लड़का संताजी मर गये। माता-पिता तो पहले ही गुजर चुके थे। इनसब आपत्तियों से ऊबकर तुकाराम घर से निकल गये और एक पहाड़ की गुफ़ा में ईश्वर का ध्यान करने लगे। पंद्रह दिन तक बिना खाये-पिये समाधि लगाने पर उन्हें ईश्वर के दर्शन हुए। उसके बाद थोड़े ही दिनों में उन्हें सपने में बाबाजी चैतन्य गुरु मिले और उन्होंने 'रामकृष्णहरि' का गुरुमंत्र उनको दिया।

अब तुकाराम अपने हृदय की बात कविता में कहने लगे। उनकी कविता 'अभंग' नाम के छंद में है। जैसे कबीर की साखियाँ, वैसे ही तुकाराम के अभंग। महाराष्ट्र में आम तौर पर किसान लोग कथा-कीर्तन नहीं

करते थे, मगर तुकाराम ने कीर्तन करना शुरू किया। इससे कुछ विवेकहीन ब्राह्मणों को बड़ा गुस्सा आया और उन्होंने तुकाराम को तरह-तरह से सताया।

तुकाराम को बदनाम करने के लिए एक बार एक बदचलन औरत को अकेले में उनके पास भिजवा दिया गया, मगर उसकी एक न चली। तुकाराम महाराज ने कहा—

पराविया नारी रखुमाई समान।
गेलें हें नेमून ठाईंचें ची॥
जाई वो तूं माते न करी सायास।
आम्ही विष्णुदास तैंसे न हों॥
न साहावें मज तुझें हें पतन।
न को हें वचन दुष्ट वदों॥
तुका म्हणे तुज पाहिजे भ्रतार।
तरी काय नर थोड़े जाले॥

—हमारे लिए दूसरे की स्त्री तो रखुमाई देवी के समान है। यह बात मन में पक्की हो गई है। ऐ माँ! तू चली जा, कोई कोशिश मत कर। हम विष्णुदास ऐसे बदकार नहीं हैं। तेरा यह पतन मुझसे देखा नहीं जाता। तू अपने मुँह से ऐसी गंदी बात मत निकाल। (तुकाराम कहता है) अगर तुझे शौहर ही चाहिए तो क्या दुनिया में मर्दों की कमी है ?

तुकाराम के हृदय की यह पवित्रता देखकर वह स्त्री शरम से जमीन में गड़ गई और अन्त में उनकी भक्त बन गई।

तुकाराम कहते थे कि मैंने जो कुछ लिखा है, वह मेरा नहीं है, भगवान ने ही मुझसे लिखवाया है। वे कहते हैं——

साळुंकी मंजुळ बोलत से वाणी।
बोलविता धणी वेगळाची ।।
काय म्यां पामरें बोलावीं उत्तरें।
परि त्या विश्वंभरें बोलविलें ।।

——मैना बहुत मीठा गाती है, पर उसके मुँह से गाना निकालनेवाला तो और ही है। मैं बेचारा बोलना क्या जानूं? पर उस भगवान ने मुझसे यह सब बुलवाया है।

कुछ कट्टरपंथी ब्राह्मणों को उनकी यह बात पसंद नहीं आई और उन्होंने तुकाराम को अपने लिखे हुए अभंगों की पोथियाँ इंद्रायणी नदी में डुबोने के लिए मजबूर किया। अपनी पोथियों को नदी में डुबोकर तुकाराम वहीं नदी के किनारे सत्रह दिन तक मुँह में एक बूंद पानी तक डाले बिना बैठे रहे। आखिर अठारहवें दिन भगवान श्रीहरि ने बालक का भेष बनाकर तुकाराम को दर्शन दिये और उनकी डुबोई हुई पोथियाँ उनको वापस लौटा दीं। इस चमत्कार से तुकाराम

का यश चारों ओर फैल गया। उनके विरोधी भी उनके भक्त बन गये।

उसी ज़माने में छत्रपति शिवाजी ने पूना ज़िले में ही स्वराज्य की नींव डालने का काम शुरू कर दिया था। उन्होंने जब तुकाराम की कीर्ति सुनी तो उनके सम्मान के लिए पालकी, छत्र, घोड़ा, आफ़ताबी, सैकड़ों मुहरें वग़ैरह चीज़ों का नज़राना भेज दिया, मगर तुकाराम ने यह कहकर सब वापस लौटा दिया :

दिवटया छत्री घोड़े ।
हे तो बर्‍यांत न पड़े ॥

—पलीते, छत्र, घोड़े वग़ैरह चीज़ों से कोई भलाई नहीं होगी।

इसके बाद शिवाजी महाराज स्वयं तुकाराम के दर्शन करने गये। शिवाजी कई बार उनका कीर्तन सुनने भी जाते थे। एक बार मुसलमानों को इसका पता लग गया और उन्होंने कीर्तन के समय शिवाजी महाराज को घेर लिया। तुकाराम ने यह हालत देखकर ईश्वर को पुकारना शुरू किया :

न देखवे डोळां ऐसा हा आकान्त ।
परपीड़ें चित्त दुःखी होते ॥

—यह हमसे नहीं देखा जाता, दूसरों की पीड़ा

से हमारा मन दुखी होता है।

इसपर भगवान की करामात तो देखिये कि घेरा डालनेवाले मुसलमानों को कीर्तन सुननेवाला हर आदमी शिवाजी महाराज जैसा ही दिखाई देने लगा। वे चक्कर में पड़ गये और इस बीच शिवाजी महाराज वहां से निकल गये।

इस तरह के कई चमत्कार तुकाराम महाराज के बारे में बरसों से कहे जाते हैं। यह कहना कठिन है कि इनमें इतिहास की दृष्टि से कितनी सच्चाई है, मगर लोगों के दिलों पर उनका बड़ा असर है।

तुकाराम महाराज को घर-गिरस्ती में कोई दिलचस्पी नहीं थी, मगर उन्होंने लोगों को यही समझाया कि हरएक को अपना कार्य करते हुए ईश्वर का नाम लेना चाहिए। भीख मांगकर ख़ुदा का नाम जपना उनको बिलकुल पसन्द नहीं था। वह कहते थे :

भिक्षापात्र अवलंबिणें ।
जळो जिणें लाजिरवाणें ॥

—ऐसी शर्मनाक ज़िन्दगी जल जाय तो अच्छा हो, जिसमें भीख मांगी जाती है।

सन् १६४९ में फाल्गुन बदी ५[१] संवत् १७०५ के

१. यह तिथि नई खोज के अनुसार दी गई है। अबतक फागुन बदी २

दिन तुकाराम महाराज श्री विट्ठल भगवान का कीर्तन करते-करते अचानक अदृश्य हो गये। लोगों ने कहा—महाराज अपने शरीर के साथ वैकुंठ चले गये। आज भी महाराष्ट्र के भक्त लोग मानते हैं कि तुकाराम सदेह वैकुंठ चले गये। जो हो, एक बात साबित हो चुकी है कि मराठी-भाषी लोगों के हृदय से तुकाराम महाराज का नाम कभी मिट नहीं सकता और इस मानी में हम भी कह सकते हैं कि तुकाराम महाराज अमर हो गये हैं।

अब हम उनके चार हजार से अधिक अभंगों में से कुछ चुने हुए अभंग अर्थ के साथ यहां देते हैं। पाठकों को पता चलेगा कि तुकाराम ने कैसी आसान और मीठी भाषा लिखी है। तुकाराम महाराज की कविता की कई पंक्तियां आज महाराष्ट्र में कहावतों की तरह चल पड़ी हैं।

को ही तुकाराम महाराज की पुण्य-तिथि माना जाता था और उसीके अनुसार देहू में हर साल इस दिन बड़ा मेला लगता है। इस दिन को तुकाराम बीज (दूज) कहते हैं। हर साल आषाढ़ की एकादशी को देहू से पंढरपुर तुकाराम की पालकी भगवान के दर्शनों के लिए जाती है।

: २ :

तुकाराम के अभंग

पवित्र तें कुळ पावन तो देश ।
जेथें हरिचे दास जन्म घेती ।।
कर्म धर्म त्यांचा झाला नारायण ।
त्यांचेनी पावन तीन्ही लोक ।।
वर्ण अभिमानें कोण झाले पावन ।
ऐसे द्या सांगून मजपाशीं ।।
अंत्यजादि योनि तरल्या हरि भजनें ।
तयांचीं पुराणें भाट झालीं ।।
वैश्य तुळाधार गोरा तो कुंभार ।
धागा हा चांभार रोहिदास ।।
कबीर मोमीन, लतिफ मुसलमान ।
सेना न्हावी जाण, विष्णुदास ।।
कान्होपात्रा खोदु, पिंजारी तो दादू ।
भजनीं अभेदु, हरिचे पायीं ।।
चोखामेळा वंका जातीचे महार ।
त्यासी सर्वेश्वर ऐक्य करी ।।
नामयाची जनी कोण तिचा भाव ।
जेवी पंढरीराव तियेसवें ।।

यातायातीधर्म नाहीं विष्णुदासा ।
निर्णय हा ऐसा वेदशास्त्री ।।
तुका म्हणे तुम्ही विचारावे ग्रंथ ।
तारिले पतित नेणो किती ।।

—जिस कुल में हरि के भक्त जन्म लेते हैं, वह कुल पवित्र है और वह देश भी पवित्र है। स्वयं भगवान ऐसे भक्तों का कर्म-धर्म बन जाते हैं और उनके कारण तीनों लोक पावन होते हैं। आप मुझे बता दीजिये कि जाति के अभिमान से कौन बड़ा हुआ है ? हरि-भजन से अछूत वगैरह जातियों का उद्धार हो गया और पुराण उनके भाट-चारण बन गये। तुलाधार वैश्य था और गोरा कुम्हार था। रैदास चमार था, कबीर मोमिन था, लतीफ़ मुसलमान था, सेना नाई था, लेकिन सभी विष्णु के दास थे। कान्होपात्रा वेश्या थी, दादू धुनिया था, लेकिन भजन के समय हरि के चरणों में कोई भेद नहीं रहता। चोखामेला और वंका अछूत थे, परन्तु उनके साथ भगवान एक हो गये थे। जनाबाई नामदेव के घर की दासी थी; परन्तु विट्ठल भगवान उनके साथ भोजन करते थे। विष्णु के दास के लिए जातपाँत और धर्म का भेद महत्त्व नहीं रखता, ऐसा वेदशास्त्रों का निर्णय है। (तुकाराम

कहता है) आप ग्रंथ पढ़ कर देखिये, उन भक्तों ने असंख्य पतितों को उबार लिया है।

जोडोनिया धनं उत्तम वेव्हारें ।
उदास विचारें वेंच करी ।।
उत्तमचि गति तो एक पावेल ।
उत्तम भोगील जीवखाणी ।।
परउपकारी नेणे परनिन्दा ।
परस्त्रिया सदा बहिणी-माता ।
भूतदया गाई पशूंचें पालन ।
तान्हेल्या जीवन वनामाजीं ।।
शांतिरूपें नव्हे कोणाचा वाईट ।
वाढवी महत्व वडिलांचें ।।
तुका म्हणे हें चि आश्रमाचें फळ ।
परम पद बळ वैराग्याचें ।।

—अच्छे व्यापार से धन कमाकर जो उसमें किसी तरह की आसक्ति रखे बिना उसे खर्च कर डालता है उसीको अच्छी गति प्राप्त होगी और अच्छी योनि में जन्म मिलेगा। ऐसा व्यक्ति दूसरों पर उपकार करता है, औरों की बुराई नहीं करता, परस्त्रियाँ उसके लिए माँ-बहनें होती हैं। वह बड़ा रहमदिल होता है, गायों और दूसरे जानवरों को वह अच्छी तरह पालता है।

जंगलों में जो प्यासे होते हैं, उनको वह पानी पिलाता है, वह शांति का पुतला होता है। सबकी भलाई करता है और अपने पुरुखाओं का बड़प्पन अपने काम से बढ़ाता है। (तुकाराम कहता है) यही आश्रम (गृहस्थाश्रम) का फल है। इसीमें वैराग्य का बल और परमपद है।

वेद अनन्त बोलिला। अर्थ इतुकाचि साधिला।
विठोबासी शरण जावें। निज निष्ठें नाम गावें।।
सकल शास्त्रांचा विचार। अंतीं इतुकाचि निर्धार।।
अठरा पुराणीं सिद्धांत। तुका म्हणे हाचि हेत।।

—वेदों ने बहुत-कुछ ज्ञान बता दिया है, मगर उस सबका मतलब इतना ही है कि विठोबा की शरण लेनी चाहिए और अपनी निष्ठा से उसका नाम गाना चाहिए। सब शास्त्रों ने विचार करके आखिरकार यही फैसला कर दिया है और (तुकाराम कहता है) अठारह पुराणों ने भी इसी सिद्धांत को स्वीकार कर लिया है।

मऊ मेणाहून आम्ही विष्णुदास।
कठिण वज्रास भेदूं ऐसे।।
मेले जित असों, निजोनिया जागे।
जो जो जें जें मागें तें तें देऊं।।
मायबापाहुनि बहु मायावन्त।
करूं घातपात शत्रूहूनि।।

अमृत तें काय गोड आम्हां पुढें
विष तें बापुडें कडू किती ।।
तुका म्हणे आम्ही अवघेचि गोड ।
ज्याचे पुरे कोड त्याचे परी ।।

—हम विष्णुदास मोम से भी मुलायम हैं और ऐसे कठिन भी हैं कि वज्र को भी बेध दें। हम मरकर भी जीवित रहते हैं और सोते हुए भी जागते हैं। जो कोई जो कुछ माँगता है उसे वह हम दे देते हैं। हम माँ-बाप से भी ज्यादा प्यार करते हैं और दुश्मन से भी ज़्यादा नाश करते हैं। हमारे आगे अमृत की मिठास किस पेड़ की पत्ती है? हम ज़हर से भी कड़वे बन सकते हैं; पर हम पूरी तरह मीठे-ही-मीठे हैं। (तुकाराम कहता है) हम सबकी इच्छा हरएक की योग्यता के अनुसार पूरी होती रहती है।

जे का रंजले गांजले ।
त्यांसी म्हणे जो आपुले ।।
साधु तोचि ओळखावा ।
देव तेथें ची जाणावा ।।

मृदु सबाह्य नवनीत ।
तैसें सज्जनाचें चित्त ।।
ज्यासी आपंगिता नाहीं ।
त्यासी धरी जो हृदयीं ।।

दया करणें जे पुत्रासी ।
तेचि दासा आणि दासी ।।
तुका म्हणे सांगूं किती ।
तोचि भगवंताची मूर्ति ।।

—जो कोई दुखी और पीड़ित लोगों को अपनाता है, वही साधु है और वहींपर ईश्वर है। सज्जन का चित्त मक्खन की तरह अंदर और बाहर से मुलायम होता है। वह अनाथों को हृदय से लगा लेता है और बालबच्चों की तरह ही नौकर-नौकरानियों पर दया करता है। मैं कहांतक बताऊँ ? (तुकाराम कहता है) ऐसा साधु स्वयं भगवान की मूर्ति होता है।

न मिळो खावया न वाढो संतान ।
परि हा नारायण कृपा करो ।।
ऐसी माझी वाणी मज उपदेशी ।
आणीक लोकांसी हें ची सांगे ।।
विटंबो शरीर, होत कां विपत्ती ।
परी राहो चित्तीं नारायण ।।
तुका म्हणे नाशवंत हें सकळ ।
आठवी गोपाळं तेंची हीत ।।

—हमको भले ही खाने-पीने को न मिले और भले ही हमारे बालबच्चे न हों, मगर यह नारायण अवश्य

कृपा करें। मेरी वाणी मुझे ऐसा ही उपदेश देती है और दूसरे लोगों को भी यही बताती है। इस शरीर की चाहे जितनी दुर्गति हो जाय, चाहे जितनी आफतें हम पर टूट पड़ें; पर चित्त में नारायण ही रहें (तुकाराम कहता है) यह सारा संसार नाशवान है, अतः गोपाल का स्मरण करने में ही तुम्हारा हित है।

काय वाणूं आतां न पुरे हे वाणी ।
मस्तक चरणीं ठेवीतसे ॥
थोरीव सांडीली आपुली परी सें ।
नेणे शिवों कैसें लोखंडासी ॥
जगाच्या कल्याणा संतांच्या विभूती ।
देह कष्ट वोती उपकारें ॥
भूतांची दया हें भांडवल सं तां।
आपुल्या ममता नाहीं देहीं ॥
तुका म्हणे सुख पराविया सूखें।
अमृत हें मुखें स्रवतसें ॥

---संतों के बड़प्पन का मैं क्या बखान करूँ? मेरी वाणी उसके लिए काफी नहीं है। मैं केवल उनके चरणों पर सिर रखता हूँ। पारस पत्थर ने अपने बड़प्पन का ख़याल अपने दिल से निकाल दिया है। वह ऐसा नहीं सोचता कि मैं नीच लोहे को कैसे स्पर्श

करूँ । जगत के कल्याण के लिए ही संत होते हैं। वे औरों पर उपकार करके अपनी देह को तकलीफ देते हैं। जीवों पर दया करना ही संतों की पूंजी है। अपनी देह पर उनको ममता नहीं होती । (तुकाराम कहता है) औरों के सुख में ही संत अपना सुख मानते हैं और उनके मुंह से मानो अमृत बहता रहता है।

जेथें जातों तेथें तूं माझा सांगाती ।
चालवीसी हातीं धरूनिया ।।
चालों वाटे आम्ही, तुझाचि आधार ।
चालविसी भार सर्व माझा ।।
बोलों जातां बरळ करिसी तें नीट ।
नेली लाज धीर केलों देवा ।।
अवघे जन मज झाले लोक पाळ ।
सोईरे सकळ प्राणसखे ।।
तुका म्हणे आता खेळतों कौतुकें ।
झालें तुझें सुख अन्तर्बाह्य ।।

—हे भगवान, मैं जहां भी जाता हूँ, तू मेरे साथ रहता है और मेरा हाथ पकड़कर मुझे चलाता है। हमको ऐसा लगता है कि हम खुद अपनी ताकत से चलते हैं; पर असल में तेरे आधार से ही हम चल सकते हैं। मेरा सारा बोझ तू ढोता है। मैं जब कुछ ऊटपटांग

बकता हूँ तब तू मेरी बातों को ठीक कर देता है। मेरी शर्म और डर को दूर करके तूने मुझे निडर बनाया है। अब सारी जनता मेरे लिए राजा बन गई है और सारे लोग रिश्तेदार एवं प्यारे मित्र बन गये हैं। (तुकाराम कहता है) अब मैं बड़े कौतुक के साथ खेलता हूं, क्योंकि अन्दर और बाहर तेरा ही सुख मुझे मिल गया है।

क्षमा शस्त्र जया नराचिया हातीं।
दुष्ट तया प्रति काय करी॥
तृणा नाहीं तेथें पडिला दावाग्नि।
जाय तो विझोनी आपसया॥
तुका म्हणे क्षमा सर्वांचें स्वहित।
धरा अखंडित सुखरूप॥

——जिस आदमी के हाथ में क्षमा-रूपी हथियार हो, उसका कोई दुष्ट क्या बिगाड़ सकता है? जहाँ सूखी घास नहीं है वहाँपर चाहे जितनी अधिक आग पड़े, तो भी वह आप-ही-आप बुझ जाती है। (तुकाराम कहता है) क्षमा में ही सबका हित और भलाई है, उसीको आप हमेशा अपनाइये और सुखी होजाइये।

आणीक दुसरें मज नाहीं आतां।
नेमिलें या चित्ता पासुनियां॥

पांडुरंग ध्यानीं, पांडुरंग मनीं ।
जागृतीं स्वप्नीं पांडुरंग ।।
पडिलें वळण इंद्रियां सकळां ।
भाव तो निराळा नाहीं दुजा ।।
तुका म्हणे नेत्रीं केली ओळखण ।
तटस्थ तें ध्यान विटेवरी ।।

—अब मुझे अपने दिल में बसे हुए भगवान विट्ठल के सिवाय कुछ भी दिखाई नहीं देता। ध्यान में, मन में, जागते हुए और सपने में पांडुरंग ही पांडुरंग रहता है। सारी इंद्रियों को यही आदत पड़ गई है। इससे अलग भाव मन में नहीं रहा है। (तुकाराम कहता है) मेरी आँखों में भगवान विट्ठल की वही मूर्ति बस गई है, जो ईंट पर खड़ी है।

लहानपण देगा देवा। मुंगी साखरेचा रवा ।।
ऐरावत रत्न थोर। त्यासी अंकुशाचा मार ।।
ज्याचे अंगीं मोठे पण। तया यातना कठिण ।।
तुका म्हणे जाण। व्हावें लहनाहुनि लहान ।।

—हे देव, हमको छुटपन ही दे देना। चींटी बहुत छोटी होती है, उसको शक्कर खाने को मिलती है। मगर इतने बड़े इंद्र के रत्न के समान ऐरावत हाथी को अंकुश की मार सहनी पड़ती है। इसका कारण यह है

कि जिसमें बड़प्पन होता है, उसको बहुत तकलीफ़ उठानी पड़ती है। (तुकाराम कहता है) इसलिए छोटे से भी छोटा होना ही अच्छा है।

कन्या सासुऱ्यासी जाये। मागें परतोनि पाहे ॥
तैसें झालें माझ्या जिवा। केव्हां भेटसी केशवा ॥
चुकलिया माये। बाळ हुरू हुरू पाहे ॥
जीवना वेंगळी मासोळी। तैसा तुका तळमळी ॥

—जब लड़की ससुराल जाती है तब बार-बार पीछे मुड़कर देखती है। वैसी ही मेरी हालत हो गई है। हे केशव, तुम मुझे कब मिलोगे? जैसे माँ से बिछुड़ने वाला बच्चा बेचैन होकर इधर-उधर देखता है और पानी से अलग पड़ी हुई मछली तड़पती है, वैसे ही यह तुकाराम ईश्वर से बिछुड़कर छटपटाता है।

नको नको मना गुंतूं माया जाळीं।
काल आला जवळीं ग्रासावया ॥
काळाची हे उडी पंडेल बा जेव्हां।
सोडविना तेव्हां मायबाप ॥
सोडविना राजा देशीचा चौधरी।
आणीक सोइरीं भलीं भलीं ॥
तुका म्हणे तुला सोडविना कोणी।
एका चक्रपाणी वांचूनिया ॥

—हे मन, तू मायाजाल में मत फँसा रह। तुझको निगलने के लिए काल नज़दीक आ गया है। जब काल यानी मौत टूट पड़ेगी तब तुझे माँ-बाप नहीं छुड़ा सकेंगे। बड़ा राजा या गाँव का चौधरी भी मौत के मुंह से नहीं छुड़ा सकते और न बड़े-बड़े रिश्तेदार भी वैसा कर सकते हैं। (तुकाराम कहता है) उस चक्रपाणि के सिवा कोई नहीं छुड़ा सकेगा।

रात्रीदिवस आम्हां युद्धाचा प्रसंग ।
अंतर्बाह्य जग आणि मन ॥
जीवाही आगोज पडती आघात ।
येऊनिया नित्य नित्य वारू ॥
तुका म्हणे तुझ्या नामाचिया बळें ।
अवघीयांचें काळें केलें तोंड ॥

—हमारे लिए रात-दिन लड़ाई का प्रसंग रहता है। वह लड़ाई बाहरी जगत और अपने दिल के साथ चलती रहती है। हमारे ऊपर बड़े आघात होते हैं और ये आघात लगातार होते रहते हैं। (तुकाराम कहता है) मगर हे भगवन, तुम्हारे नाम के बल से मैंने सबका मुंह काला कर दिया है यानी सबको परास्त कर दिया है।

आतां तरी पुढें हाचि उपदेश ।
नका करूं नाश आयुष्याचा ॥

सकळांच्या पायां माझें दंडवत ।
आपुलालें चित्त शुद्ध करा ।।
हित तें करावें देवाचें चिंतन ।
करूनिया मन एकविध ।।
तुका म्हणे लाभ होय तो व्यापार ।
करा काय फार शिकवावें ।।

——इसके बाद तो यही उपदेश है कि अपनी आयु का नाश आप न करें। सबके चरणों में मेरा प्रणाम है और आपसे प्रार्थना है कि अपना चित्त शुद्ध करें। अपने मन को एकाग्र करके आप ईश्वर का चिंतन करें, इसीमें आपका हित है। (तुकाराम कहता है) हम अधिक क्या सिखाएं ? केवल यही कहना है कि ऐसा व्यापार कीजिए, जिसमें मुनाफ़ा हो यानी ईश्वर-भक्ति ही करते रहिये।

आलिया भोगासी असावें सादर ।
देवावरी भार घालूनिया ।।
मग तो कृपासिंधु निवारी सांकडें ।
येर तें बापुडें काय रंक ।।
भयाचिये पोटीं दुःखाचिया रासी ।
शरण देवासी जातां भले ।।
तुका म्हणें नव्हे काय त्या करितां ।
चिंतावा तो आतां विश्वंभर ।।

—जो भी दुःख किस्मत में लिखे हुए हों, उन्हें हमें आनंद से और भगवान पर भरोसा रखकर सहना चाहिए। ऐसा करने पर वह दया का सागर सारे संकटों को दूर कर देगा। बेचारे मामूली लोग संकट में क्या कर सकते हैं, भय के पेट में ही सारे दुःख भरे हुए होते हैं। इसलिए भीति छोड़कर ईश्वर की शरण में जाना अच्छा है। (तुकाराम कहता है) आप नाहक चिन्ता न करें, अब विश्वंभर का ही चिंतन करते रहिए।

वेदाचा तो अर्थ आम्हांसीच ठावा।
येरांनीं वाहावा भार माथां॥
खादल्याची गोडी देखिल्यासी नाहीं।
भार धन वाही मजुरीचे।
उत्पत्ति पाळण संहाराचें निज॥
जेणें नेलें बीज त्याचे हातीं।
तुका म्हणे आम्हां सांपडलें मूळ।
आपणाचि फळ आलें हातां॥

—वेदों का अर्थ केवल हमको ही मालूम है। दूसरे लोग सिर्फ अपने सिर पर बोझ ढोते हैं। जिसने खाया है वही मिठास को जान सकता है, देखनेवाला नहीं। और लोग तो मानो पैसों में मजदूरी लेकर ज्ञान का बोझ ढोते हैं। उत्पत्ति, पालन और संहार का मूल बीज

जिसने पकड़ लिया वही अमर हो गया है, इसलिए उसका फल भी हमारे हाथ में आ गया है।

नाम घेतां उठाउठी। होय संसारासी तुटी।
ऐसा लाभ बांधा गांठीं। विट्ठल पायीं पड़े मिठी।
नामापरते साधन नाहीं। जें तूं आणिक करीसी कां हीं॥
हांकारोनी सांगे तुका। नाम घेतां राहो नका॥

—अगर हम भगवान का नाम ले लें तो तुरन्त संसार के बंधनों से छूट जाते हैं। आप ऐसा लाभ गांठ में बांध लीजिए, जिससे विट्ठल के चरणों में आपका सिर झुक जाए। नाम को छोड़कर दूसरा कोई साधन नहीं है, जिसे तुम अपना सकोगे। तुकाराम पुकार-पुकार कर कहता है कि आप नाम लिये बगैर न रहिए।

हें चि दान देगा देवा।
तुझा विसर न व्हावा॥
गुण गाईन आवड़ी।
हेंचि माझी सर्व जोडी।
न लगे मुक्ति धन संपदा।
संतसंग देई सदा॥
तुका म्हणे गर्भवासी।
सुखें घालावें आम्हासी॥

—हे भगवन, मुझको यही दान दो कि मैं तुम्हें भूल

न जाऊँ। तुम्हारे गुण प्रेम से गाना ही मेरा सबकुछ है। मुझे न तो मुक्ति चाहिए और न धन-दौलत ही। मुझे हमेशा केवल संतसंग दे दो। (तुकाराम कहता है) मैं पुनर्जन्म से नहीं डरता। तुम मुझे बड़ी खुशी से दूसरा जन्म दे सकते हो।

फोडिलें भांडार धन्याचा हा माल। मी तंव हमाल भारवाही।
तुका म्हणे चाली झाली चहूं देशीं। उतरला कसीं खरा माल॥

——यह सब माल मेरे मालिक का है। उसने अपना भंडार खोल दिया है। मैं तो सिर्फ उसका बोझ ढोने वाला कुली हूं। (तुकाराम कहता है) मैं चारों ओर घूम आया हूं, मेरा यह नामरूपी माल कसौटी पर खरा उतरा है।

: ३ :

तुकाराम के हिंदी पद

भारत के पुराने संतों ने अपनी मातृभाषा के साथ ही राष्ट्रभाषा हिन्दी में भी रचना की है। यह ठीक है कि उनकी हिन्दी पर वहां की स्थानीय बोली या भाषा का असर बहुत ज्यादा पाया जाता है, मगर इसकी

परवा भक्तों को कहां थी ? वे तो अपनी मस्ती में कविता कर जाते थे। उस जमाने में 'हिन्दी' शब्द चालू नहीं था। उस भाषा को महाराष्ट्र के संतों ने 'हिन्दुस्थानी' कहा है। तुकाराम ने 'हिन्दुस्थानी' भाषा में कई पदों की रचना की है। उनमें से कुछ यहां दिये जाते हैं :

आप तरे त्याकी[1] कौन बड़ाई[2] ।
औरन कु भलो नाम धराई ।।
काहे भूमि इतना भार राखे ।
दुभत धेनु नाहीं दूध चाखे ।।
बरसत मेघ फलत हीं बिरखा[3] ।
कोन काम आपनी उन्ह तिरखा[4] ।।
काहे चंदा सूरज खावे फेरा ।
खिन एक बैठ न पावत घेरा ।।
काहे परिस कंचन करे धातु ।
नहिं मोल टूटत पावन धातु ।।
कहे तुका उपकार ही काज ।
सब करि रहिया वह रघुराज ।।
बार बार काहे मरत अभागी ।

१. उसकी २. बड़ाई ३. पेड़ ४. प्यार

बहुरि मरनसे क्या तोरे भागी ।।
ये ही तन करते क्या ना होये।
भजन भगति कर बैकुंठ जाये ।।
राम नाम मोल नहीं बेचे कबरी[1]।
वो ही सब माया छुरावत झगरी[2] ।।
कहे तुका मनसूं मिल राखो।
राम रस जिह्वा सों चाखो ।।
अल्ला देवे अल्ला दिलावे।
अल्ला दारू अल्ला खिलावे ।।
अल्ला बिगर नहीं कोय।
अल्ला करे सोई होय ।।
मेरी दारू जिन्हने खाया।
दीदार दरगां सोई पाया ।।
तल्ले मुंढी[3] घाल जावै ।
बिगारी सोवे क्या लेवै ।।
बाजार का बूझे भाव।
वो ही पूछत आवे ठाव ।।
फोकट[4] बाँटूं कहे तुका।
लेवे सो ही लेवो सखा ।।
अल्ला करे सो होय बाबा।

१. कौड़ी २. झगड़ी ३. गर्दन ४. मुफ्त

करतार का सिरताज ॥
गाऊ बछड़े तीस चलावे ।
यारो बाधो न सात ॥
ख्याल मेरा साहेब का ।
बाबा हुआ करतार ॥
व्हांरे आधे चढ़े पीठ ।
आपे हुआ असवार ॥
जिकिर करो अल्ला का बाबा ।
सबक्या[1] अन्दर भेस ॥
कहे तुका जो नर बूझे ।
सो ही भया दरवेस ॥

१. सबके ।

समाज-विकास-माला की पुस्तकें

१. बद्रीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. निषाद और शबरी
११. गांव सुखी, हम सुखी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तन्दुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी-मानस-मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी महेता

मूल्य प्रत्येक का छः आना

सस्ता साहित्य मण्डल

२९

छः आना